Aristotle: अरस्तू (384—322) = 62 वर्ष

अरस्तू का जन्म एथेन्स से 200 मील दूर (Stagira) स्टेगिरा में हुआ था। अरस्तू के पिता का नाम निकोमेकस था। जो मेसिडोनिया के राजा एमिन्टस को राजवैद्य थे। 17 वर्ष की उम्र में वह Plato के संपर्क में रहकर Academy में रहा। Plato की मृत्यु (347) के उपरान्त वह अपने मित्र। जेनोक्रेटिज के साथ। 12 वर्षों तक भ्रमण करता रहा। इसी दौरान अतार्नियस के राजा हरमीज की भानजी एवं दत्तक पुत्री पाइथियाज से विवाह कर लिया। 7 वर्षों तक सिकन्दर महान का शिक्षक भी रहा। 335 में वह एथेन्स लौटा और (Lyceum) लाइसियम जो शिक्षा का केन्द्र था स्थापित किया। चूंकि यह ~~Athens की~~ लिसियम नामक यूनानी देवता के ~~पार्क~~ मंदिर के पास था। अतः इसका नाम Lyceum रखा।

Writing of Aristotle:

1 - The politics
2 - Constitution

The politics के बारे में M.B Foster ने कहा कि "अरस्तू ~~सबसे~~ की महानता उसके जीवन में नहीं वरन् उसकी रचनाओं में प्रदर्शित होती है। Politics राजनीति के लिए निर्देशों का संग्रह एवं संविधान निर्माताओं के लिए पाठ्य-पुस्तक की भाँति है।

The politics → आठ खण्डों में विभाजित है

1 - पहला भाग — गृहस्थी एवं गृहस्थी की ~~आर्थिक~~ अर्थव्यवस्था से है
2 - दूसरा भाग — आदर्श राज्य पर आधारित है। जिसमे Plato के रिपब्लिक तथा लाज की आलोचना है
3 - तीसरा भाग — संविधान के सामान्य सिद्धान्तों की विवेचना है।
— नागरिक विषयक विचार तथा संविधान के वर्गीकरण
~~4~~ — वितरणात्मक न्याय के सिद्धान्त की भी चर्चा है
4 ~~—~~ — चौथी + पाँचवी → व्यावहारिक वास्तविक राजनीतिक जीवन की विभिन्न समस्याओं पर विचार करता है। क्रांति विषयक विचार यहीं उपलब्ध है
5 - छठी — लोकतंत्र तथा कुलीनतंत्र के स्थाई आधार
6 - सातवी + आठवी — आदर्श राज्य की रूपरेखा

अरस्तू के राज्य-सम्बन्धी विचार

अरस्तू राज्य को एक कृत्रिम संस्था न मानकर प्राकृतिक समुदाय मानता है. वह राज्य को एक राजनीतिक समुदाय मानता है और अपने स्वरूप में सर्वव्यापी है इसलिए वह कहता है मनुष्य एक सामाजिक/राजनीतिक प्राणी है.

Growth of Political Thought in west में जेलर ने लिखा "राज्य मनुष्य के लिए उतना ही ~~आवश्यक~~ प्राकृतिक है जितना परिवार या गोत्र। यह उतना ही प्राकृतिक है जितना मछली के लिए जल। यह वह माध्यम है जिसके बिना मानव प्रतिभा कभी भी अपने पूरे रूप में नहीं आ सकती।"

राज्य की उत्पत्ति: (Origin of the state)

अरस्तू राज्य के सावयवी सिद्धान्त (Organic Theory) का समर्थक है। वह मनुष्य को उसके स्वभाव एवं आवश्यकता दोनों की दृष्टि से एक सामाजिक प्राणी मानता है। राज्य की उत्पत्ति मनुष्य की उन प्राकृतिक प्रवृत्तियों में ढूंढने का प्रयास करता है जो मनुष्य को अपनी आर्थिक आवश्यकताओं तथा प्रजातीय निरन्तरता के लिए विवश करती है। मनुष्य की यही चेतना उसे परिवार की स्थापना के प्रेरित करती है। परिवार की स्थापना व्यक्ति के जैविक आवश्यकताओं के कारण होती है. अरस्तू के शब्दों में "सर्वप्रथम उनका सम्मिलन होना जो एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते है for exam - स्त्री-पुरुष ताकि पीढ़ी चलती रहती। जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु परिवार का जन्म स्वभाविक रूप में होता है.

परिवारों का स्वभाविक विकास हुआ। बहुत से परिवारों को एक साथ रहने से ग्राम की उत्पत्ति हुई। ग्राम में व्यक्ति की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति होने लगी। अरस्तू राज्य की विकास का दूसरा चरण मानता है (ग्राम) कई ग्राम आपस में मिलकर राज्य को जन्म देते है. राज्य सैन्य संगठन के माध्यम से बाह्य आक्रमण से रक्षा करता है।

अरस्तू का राज्य के विकास की प्रक्रिया तीन चरणों से होकर गुजरती है.

- पहला चरण (प्राकृतिक प्रवृत्ति): स्त्री-पुरुष को परस्पर आकर्षित करती है जिससे मानव जाति का विनाश होने से बच जाता है.
- दूसरी प्रवृत्ति: स्वामी एवं सेवक के सम्बन्ध को उत्पन्न करती है जिससे परिवार के भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है.
- तीसरी प्रवृत्ति: के अनुसार यही परिवार अन्त: विकसित होकर ग्राम का रूप धारण कर लेता है इन ग्रामों का समूह राज्य का रूप धारण करता है

(पहला चरण + दूसरी प्रवृत्ति) → परिवार को जन्म देती है

1 - परिवार — प्रजनन एवं भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति — (क)

2 - ग्राम — न्याय एवं धार्मिक कार्यों के लिए पंचायत की स्थापना (ख)

3 - नगर-राज्य - (क) + (ख) + सैनिक संरक्षण, कलाओं तथा विकास के लिए नगर-राज्य (Polis) की स्थापना।